1. पूर्ति की कीमत लोच के विभिन्न श्रेणियों को रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

पूर्णतया लोचदार पूर्ति (Es = ∞) जब कीमत में परिवर्तन ना होने पर भी अथवा अत्यंत सूक्ष्म परिवर्तन होने पर भी पूर्ति में बहुत अधिक परिवर्तन हो जाता है। तब वस्तु की पूर्ति लोच पूर्णतः लोचदार होती है।

इकाई से अधिक लोचदार पूर्ति (Es > 1)

जब किसी वस्तु की पूर्ति में प्रतिशत परिवर्तन कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन से अधिक होता है, तब पूर्ति की लोच इकाई से अधिक होती है।

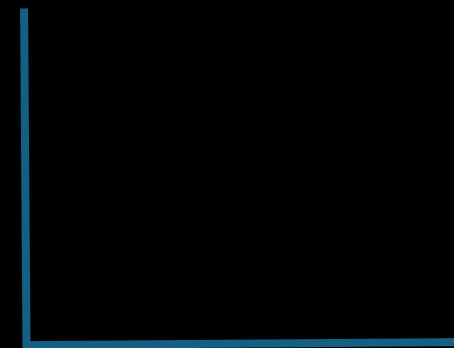

इकाई लोचदार पूर्ति (Es = 1)

जब किसी वस्तु की पूर्ति में ठीक उसी अनुपात में परिवर्तन होता है जिस अनुपात में कीमत परिवर्तन हुआ है तब वस्तु की पूर्ति लोच इकाई के बराबर होती है।

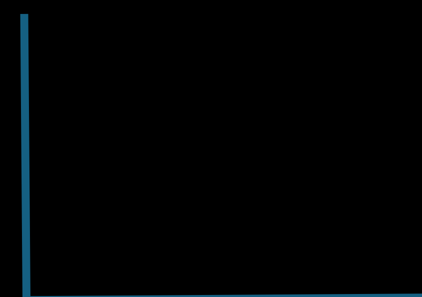

इकाई से कम लोचदार पूर्ति अथवा बेलोचदार पूर्ति (Es < 1)

जब किसी वस्तु की पूर्ति में आनुपातिक परिवर्तन कीमत के अनुपातिक परिवर्तन से कम होता है तब इसे इकाई से कम लोचदार पूर्ति कहते हैं।

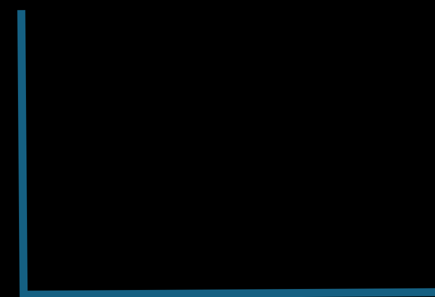

पूर्णतः बेलोचदार पूर्ति (Es = 0)

जब वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने पर भी पूर्ति में कोई परिवर्तन नहीं होता तब पूर्ति की लोच पूर्णतः बेलोचदार होती है।

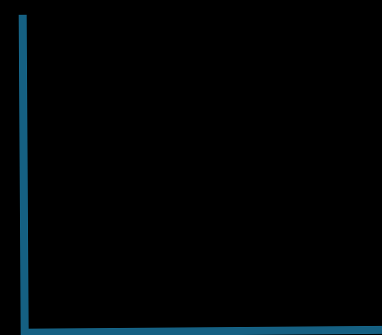

2. निम्न तालिका से एक रेखाचित्र का निर्माण कीजिये तथा संतुलन कीमत प्रदर्शित कीजिए।

कीमत (₹में)	10	15	20	25	35
मांग (इकाई में)	100	80	60	40	20
पूर्ति (इकाई में)	20	40	60	80	100

उत्तर:

संतुलन कीमत वह कीमत है जो मांग एवं पूर्ति की शक्तियां द्वारा उस बिंदु पर निर्धारित होती है जहाँ वस्तु की मांग और वस्तु की पूर्ति आपस में बराबर होती है।

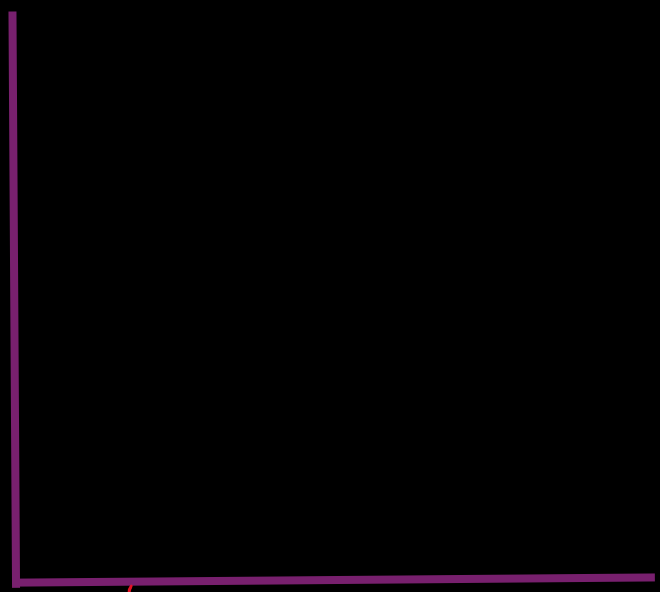

3.केंद्रीय बैंक के प्रमुख कार्यों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: **केंद्रीय बैंक के प्रमुख कार्य:-**

A) **नोटों का निर्गमन** - केंद्रीय बैंक सबसे पहला कार्य होता है देश के लिए नोटों का निर्गमन करना । जिससे की सम्पूर्ण देश में नोटों की एकरूपता बनी रहे ।

B) **सरकार का बैंकर** - व्यापारियों और सामान्य व्यक्तियों की भांति सरकार को भी बैंक सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है । केंद्रीय बैंक सरकार के बैंक के रूप में वे सभी कार्य करते है जो एक व्यापारिक बैंक अपने ग्राहक के लिए करता है ।

C) **बैंकों के बैंक के रूप में कार्य** :- प्रत्येक देश में केंद्रीय बैंक बैंकों के बैंक के रूप में कार्य करता है । केंद्रीय बैंक देश का सर्वोच्च बैंक होता है । देश के सभी बैंक केंद्रीय बैंक के साथ अपना बैंकिंग सम्बन्धी कारोबार रखते है ।

D) **अंतिम ऋणदाता के रूप में कार्य** :- अंतिम ऋणदाता से आशय यह है की जब सदस्य बैंकों को किन्हीं भी स्रोतों से ऋण नहीं मिलता तो ऐसे समय में केंद्रीय बैंक व्यापारिक बैंक की सहायता करता है।

E) **विदेशी विनिमय कोषों का संरक्षक**- देश का केंद्रीय बैंक विदेशो से आने वाले कोषों के सुरक्षित एवं श्रेष्ठतम उपयोग के लिए कार्य करता है । विदेशी कोषों के नियंत्रण एवं नियमन सम्बन्धी सभी अधिकार केंद्रीय बैंक के पास होता है ।

4.निम्न से सीमांत परिवर्ती लागत की गणना कीजिए।

उत्पादन	1	2	3	4	5	6
औसत परिवर्ती लागत	60	40	30	26.25	28	35

उत्तर:

उत्पादन (Q)	औसत परिवर्ती लागत (AVC)	कुल परिवर्ती लागत (TVC)	सीमांत परिवर्ती (MC)
1	60		
2	40		
3	30		
4	26.25		
5	28		
6	35		

5.संतुलन कीमत से आप क्या समझते हैं? मांग और पूर्ति संतुलन कीमत को किस प्रकार प्रभावित करती है?

उत्तर: संतुलन कीमत वह कीमत है जो मांग एवं पूर्ति की शक्तियां द्वारा उस बिंदु पर निर्धारित होती है जहाँ वस्तु की मांग और वस्तु की पूर्ति आपस में बराबर होती है।

संतुलन कीमत = बाजार मांग = बाजार पूर्ति

संतुलन कीमत में परिवर्तन

मांग में वृद्धि

जब पूर्ति स्थिर रहती है और केवल मांग में वृद्धि हो जाती है तो ऐसी स्थिति में संतुलन कीमत और संतुलन मात्रा दोनों में वृद्धि होती है।

पूर्ति में वृद्धि

यदि वस्तु की मांग स्थिर रहे और केवल वस्तु की पूर्ति बढ़ने पर पूर्ति विभाग दाईं ओर खिसक जाता है, जिससे संतुलन मूल्य गिर जाता है, लेकिन संतुलन मात्रा में वृद्धि हो जाती है।

मांग एवं पूर्ति में एक साथ वृद्धि

यदि मांग में वृद्धि अधिक
और पूर्ति में वृद्धि कम हो
तो संतुलन कीम बढ़ जाएगा।

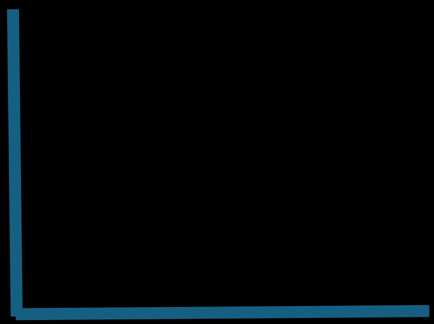

यदि मांग और पूर्ति दोनों में
वृद्धि समान हो तो संतुलन
मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं
होगा।

यदि मांग में वृद्धि कम और पूर्ति में
वृद्धि अधिक हो तो संतुलन कीमत
पहले से कम हो जाएगा।

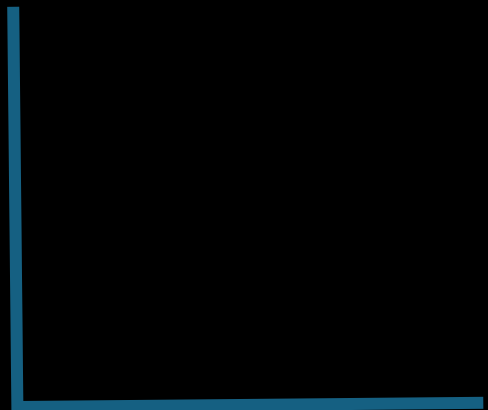

6.व्यावसायिक बैंक की परिभाषा दीजिये तथा इसके कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर: व्यापारिक बैंक वह संस्था है जो जनता से जमाओं को स्वीकार करती करती है तथा उनके मांगे पर लौटाती है साथ ही जनता के लिए ऋणों की व्यवस्था भी करती है ।

व्यापारिक बैंकों के कार्यों को तीन वर्गों में बांटा गया है -

1. मुख्य कार्य
2. द्वितीयक / गौण कार्य
3. सामाजिक कार्य

व्यापारिक बैंकों के मुख्य कार्य - एक व्यापारिक बैंक के तीन मुख्य कार्य होते है -

I) **जमायें स्वीकार करना** - व्यापारिक का सबसे पहला कम जनता से जमाओं को स्वीकार करना होता है । और यह जमाये प्रमुखतः चार प्रकार के खातों में किया जाता जाता है - चालू खाता , बचत जमा, सावधि जमा खाता तथा आवर्ती जमा खाता ।

II) **ऋण देना** - व्यापारिक बैंक का दूसरा मुख्य कार्य लोगो के मांगने पर उनके ऋण देना है । एक बैंक निम्न प्रकार के ऋण उपलब्ध कराती है - नकद साख, अधिविकर्ष, ऋण एवं अग्रिम, विनिमय पत्रों की कटौती तथा सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश ।

III) **साख निर्माण** - वर्तमान समय में साख का निर्माण करना व्यापारिक बैंकों का प्रमुख्कार्य बन गया है ।

व्यापरिक बैंकों के गौण कार्य :- व्यापारिक बैंकों के गौण कार्यों को दो भागों में बांटा गया है -

- **एजेंट के रूप में कार्य**

1. विभिन्न मदों का एकत्रीकरण एवं भुगतान
2. अपने ग्राहकों के आदेश पर प्रतिभुतियों की खरीद एवं बिक्री करना
3. धन का प्रेषण करना
4. ग्राहकों के लिए ट्रस्टी एवं ,प्रवन्धक का कार्य करना
5. विदेशी मुद्रा का क्रय विक्रय करना

- **समान्य उपयोगिता के रूप में कार्य**

1. लाकर की सुविधा देना
2. ATM कार्ड, क्रेडिट कार्ड की सुविधा
3. व्यापारिक सूचनाओं का एवं आंकड़ों का एकत्रीकरण करना

7.समग्र मांग से क्या अभिप्राय है? इसके मुख्य घटक क्या है उल्लेख कीजिये?

उत्तर: **समग्र मांग** :- एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और वस्तुओं की सम्पूर्ण मांग को ही सामूहिक मांग कहते है । यह अर्थव्यवस्था के कुल व्यय के रूप में व्यक्त की जाती है ।

कीन्स के अनुसार, सामूहिक मांग का अर्थ उस आय से लिया जाता है जो सभी फर्में (उत्पादक) एक निर्दिष्ट रोजगार स्तर पर अपनी वस्तुओं को बेचकर प्राप्त करने की आशा करती है या यह वह कुल व्यय है जो देश के सभी उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं की खरीदने के लिए करते है।

इस प्रकार ,

सामूहिक मांग = उपभोग व्यय + विनियोग व्यय

AD = C + I

सामूहिक मांग की विशेषताएं :-

1. वस्तुओं और सेवाओं की मांग दो उद्‌देश्यों से की जाती है - उपभोग के लिए एवं विनियोग के लिए ।
2. व्यय के अंतर्गत निजी उपभोग और सार्वजानिक उपभोग शामिल रहता है ।
3. विनियोग की मांग भी निजी व्यक्तियों तथा सरकार द्‌वारा की जाती है ।
4. सामूहिक मांग कुल उपभोग तथा विनियोग के जोड़ को कहते है ।

उदाहरण:-

आय (Y)	उपभोग (C)	विनियोग (I)	सामूहिक मांग (AD = C+I)
0	20	20	40
20	30	20	50
40	40	20	60
60	50	20	70
80	60	20	80
100	70	20	90
120	80	20	100
140	90	20	110

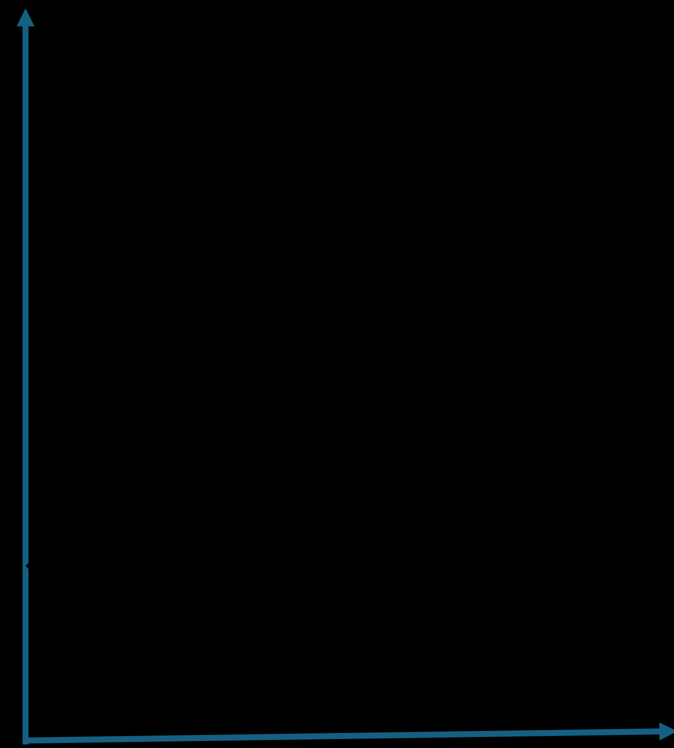

सामूहिक मांग के अवयव :-

1.बंद अर्थव्यवस्था में -

AD = C + I

(समग्र मांग = उपभोग + विनियोग)

2.खुली अर्थव्यस्था में -

AD = C + I + G + (X-M)

C - निजी उपभोग व्यय

I - निजी एवं सार्वजानिक निवेश

G - सरकारी व्यय

X-M - शुद्ध् निर्यात (निर्यात - आयत)

8.गुणक क्या है? इसकी गणना कैसे की जाती है? उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर: **गुणक** - गुणक की धारणा कीन्सीयन आय, उत्पादन एवं रोजगार सिद्धांत की एक महत्वपूर्ण धारणा है ।। निवेश की तुलना में आय में जितने गुना वृद्धि होती है उसे गुणक कहते है ।

अर्थात, *गुणक निवेश तथा आय के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है । दुसरे अर्थों में निवेश की में आय में हिने वाले परिवर्तन का अनुपातिक सम्बन्ध गुणक कहलाता है ।*

कीन्स के अनुसार, " निवेश गुणक से ज्ञात होता है कि जब कुल निवेश में वृद्धि की जाएगी तो आय में जो वृद्धि होगी, वह निवेश में होने वाली वृद्धि से K गुना अधिक होगी ।"

गुणक की गणना निम्न सूत्र किया जा सकता है -

K = ΔY / ΔI

उदहारण - यदि किसी समय सरकार अर्थव्यवस्था में ₹20 करोड़ का निवेश करती है तो अर्थव्यवस्था में ₹100 करोड़ की अतिरिक्त आय सृजित होती है। तो निवेश गुणक की गणना कीजिये।

निवेश गुणक (K) = ΔY / ΔI

ΔY - ₹100

ΔI - ₹20

K = 100 / 20

K = 5

अर्थात निवेश की तुलना में अर्थव्यवस्था की आय में 5 गुना अधिक वृद्धि हुई है।

9.पैमाने के प्रतिफल की अवधारणा को उचित चित्र द्वारा समझाइए।

उत्तर: **पैमाने के प्रतिफल का अर्थ** - पैमाने के प्रतिफल उत्पादन फलन की दीर्घकालीन प्रवृत्ति को सूचित करते हैं । दीर्घकाल में कोई उत्पत्ति का साधन स्थिर नहीं रहता । सभी उत्पत्ति के साधन परिवर्तनशील हो जाते हैं तथा उन्हें आवश्यकतानुसार परिवर्तित भी किया जा सकता है । सभी उत्पत्ति साधनों के परिवर्तनशील होने के कारण उत्पादन का पैमाना (Scale of Production) परिवर्तित किया जा सकता है ।

पैमाने के प्रतिफल की अवस्थाएँ:-

a. पैमाने के बढ़ते प्रतिफल (Increasing Returns to Scale):

जब सभी उत्पत्ति के साधनों को एक निश्चित अनुपात में बढ़ाया जाता है तब पैमाने के बढ़ते प्रतिफल के अन्तर्गत उत्पादन उस निश्चित अनुपात से अधिक अनुपात में बढ़ जाता है । इस प्रकार यदि उत्पत्ति साधनों को 10% बढ़ाया जाता है तो उत्पादन में 10% से अधिक की वृद्धि होती है ।

b. पैमाने के स्थिर प्रतिफल (Constant Returns to Scale):

इसके अनुसार यदि उत्पत्ति के समस्त साधनों को एक निश्चित अनुपात में बढ़ाया जाये तो उत्पादन भी उसी निश्चित अनुपात से बढ़ता है । इस प्रकार यदि उत्पत्ति साधनों में 10% वृद्धि की जाती है तो उत्पादन भी 10% बढ़ता है ।

c. पैमाने के ह्रासमान प्रतिफल (Decreasing Returns to Scale):

इसके अनुपात उत्पत्ति के साधनों को जिस अनुपात में बढ़ाया जाता है उससे कम अनुपात में उत्पादन में वृद्धि होती है । दूसरे शब्दों में, उत्पादन में एक समान वृद्धि प्राप्त करने के लिए साधनों की क्रमशः अधिकाधिक मात्राओं की आवश्यकता होगी ।

10. एकाधिकार का क्या अर्थ है? इसकी प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर: बाजार की एक स्थिति जिसमे वस्तु का केवल एक ही विक्रेता या उत्पादक होता है और उसका कली प्रतिस्थापन मौजूद नहीं होता है ।

एकाधिकार बाजार की विशेषताएं :

1. **एक मात्र विक्रेता :** सपूर्ण बाजार वस्तु केवल एक ही विक्रेता मौजूद होता है और उसका कोई निकटतम प्रतिद्वंदी नहीं होता है ।
2. **फर्म और उद्योग एक दुसरे के प्रयायवाची:** एकाधिकारी के अंतर्गत विक्रेता ही उद्योग होता है ।
3. **निकटतम स्थानापन्न का आभाव :** एकाधिकारी के नअंतर्गत वस्तु कोई भी निकटतम स्थानापन्न मौजूद नहीं होता है ।

4.**नई फिर्मों के प्रवेश पर प्रतिवंध :** एकाधिकार के अंतर्गत किसी नई फर्म का प्रवेश पूर्णत: प्रतिबंधित होता है ।

5.**औसत आय और सीमांत आय वक्र :-** इसमें AR और MR दोनों की वक्र नीचे की ओर ढालू होते है ।

6.**कीमत का निर्धारण:** एकाधिकार में वस्तु की कीमत का निर्धारण विक्रेता स्वयं करता है ।

7.**कीमत विभेद :** इस बाजार में कीमत विभेद की सम्भावना होती है अर्थात विक्रेता एक ही वस्तु को अलग अलग उपभोक्ताओं को अलग अलग कीमत पर बेच सकता है ।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

LIKE AND ***SHARE*** THE CLASS LINK

SUBSCRBE THE CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

WhatsApp/ 7830010683

FOLLOW ME ON INSTAGRAM / @dhalinakul

FOLLOW ME ON FACEBOOK / NAKUL DHALI